प्रतिभा पलायन- एक ज्वलन्त समस्या

अशिका,
सूचना प्रौद्योगिकी- तृतीय वर्ष

भारत अजीब विचित्रताओं वाला देश है और इसके निवासी भी अजीब प्रकृति वाले, कभी कारगिल जैसा हो जाये तो कश्मीर से कन्या कुमारी तक देश भक्ति का जज्बा यों उफान पर आ जाता है कि अचरज होता है, बाबरी मस्जिद टूट जाती है तो दो समुदायें आपसी जान के दुश्मन बन जाते हैं, बम फटने पर मानवता की करूणा उमड़ पड़ती है, लेकिन शांत दिन हों तो आधे से अधिक लोग पश्चिम की ओर मुंह किये यो ललचाये बैठे रहते हैं, मानो कब दिन फिरे कि हम वहां जा बसे।

भारत के संदर्भ में पहले प्रतिभा पलायन या अंग्रेजी में केवल ब्रेन ड्रेन शब्द का प्रयोग ही होता था, क्योंकि देश में एक स्तर से ऊपर शिक्षा प्राप्त करने से लेकर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उच्च प्रशिक्षित लोगों की केवल बाहर पलायन की प्रवृत्ति थी। कहा जा रहा है कि ब्रेन ड्रेन की प्रवृत्ति देश में ब्रेन सर्कुलेशन का कार्य करेगी।

स्विटजर लैण्ड की एक शैक्षिक संस्था आई.एम.डी. ने इस सम्बन्ध में एक सर्वेक्षण किया और पाया कि प्रत्येक 10 पढ़े-लिखे भारतीयों में 6 की विदेश जाने की इच्छा होती है कि किसी पश्चिमी देश में जा कर बस सके। सामान्य तौर पर 34 देश ऐसे हैं जहां के निवासी बड़े पैमाने पर अमेरिका तथा यूरोप में बसने का प्रयास करते हैं। भारत का स्थान इनमें तीसरा है, अर्थात जिन देशों से सबसे

ज्यादा लोग पलायन कर रहे हैं, उनमें से एक भारत भी है। यह संख्या इतनी ज्यादा है कि इसका अनुमान सिर्फ एक तथ्य से लगाया जा सकता है कि एक साल में 90 हजार प्रोफेशनल सिर्फ अमेरिका के लिए निकल जाते हैं। प्रतिभा पलायन का यह खतरनाक स्तर है। देश छोड़ कर जाने वालों में ज्यादातर लोग ऐसे होते हैं, जो आई.आई.टी. और आई.आई.एम. जैसी सर्वश्रेष्ठ संस्थाओं से निकलते हैं। इन संस्थाओं को चलाने में देश का काफी पैसा खर्च होता है। देश के संसाधनों पर पढ़ाई करने के बाद प्रतिभाएं विदेशों की सेवा में चली जाती हैं।

सर्वेक्षण करने वाली संस्था ने इसके चार कारणों का पता लगाया है:-

- मनुष्य जीवन में आगे बढ़ना चाहता है, इसके लिए हमारे देश में उचित अवसर नहीं है। फलतः निराश हताश होकर दूसरे देश चले जाते हैं।
- अत्यधिक पैसे की चाह, निश्चित रूप से विदेशों में पैसा ज्यादा है।
- नवीनतम तकनीकी एवं यंत्रों की नव विकसित टैक्नोलॉजी सीखने समझने की चाह।
- प्रशिक्षित मजदूरों की कमी भी, भारतीय बढ़ई, सफाई कर्मचारी, खानसामे व अकुशल मजदूरों की विदेशों में काम की तलाश में जाते हैं व रूपया कमाने के बाद भारत लौट आते हैं।

वर्ष 2000 की संयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट में भारत से ब्रेन ड्रेन यानि प्रतिभा पलायन की भयावह तस्वीर पेश की है। आंकलन यह था कि भारत को प्रतिवर्ष करीब 200 करोड डालर अर्थात 9400 करोड़ रूपये का घाटा हो रहा है। कुछ विशेषज्ञ उसे भी क्षति का पूर्ण आकलन नहीं मानते थे, लेकिन अब विभिन्न संस्थानों का अध्ययन बता रहा है कि पिछले पांच वर्षों में न केवल भारतीय छात्रों के, बल्कि उच्च प्रशिक्षित वैज्ञानिकों व तकनीशियनों के विदेश

जाने की संख्या में तेजी से कमी आयी है। यही नहीं, विदेशों में कार्यरत उच्च तकनीशियनों तथा वैज्ञानिकों के भारत लौटने की प्रवृत्ति में भी वृद्धि हो रही है, इस दोहरी प्रवृत्ति को आधार बनाकर ब्रेन-ग्रेन, ब्रेन सर्कुलेशन जैसी शब्दावली काफी प्रचलित हो रही है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या वाकई स्थिति भारत के पक्ष में इतनी हो गयी है कि हम उत्साहित होकर घमण्डी हो गये।

नासांकॉम के एक अध्ययन के संदर्भ से तीन वर्ष में करीब 30,000 वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों की वापसी का आंकडा दिया जा रहा है। इसका मुख्य कारण हमारे यहां शोध सुविधाओं में विस्तार माना गया है। फिक्की के ताजा अध्ययन के अनुसार भारत में अनुसंधान एवं विकास में निवेश 1997 के 110 अरब रूपये से बढ़कर 2004 में 340 अरब रूपये हो गया है।

अमेरिका में जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि उच्च प्रशिक्षित भारतीयों के उसकी ओर आने का क्रम उलट रहा है। वस्तुतः ब्रेन ग्रेन शब्द इसी रिपोर्ट से आया है। अमेरिकन इलैक्ट्रोनिक्स एसोसिएशन द्वारा गत फरवरी में प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि इस प्रक्रिया में अमेरिका का ब्रेन ड्रेन, अब भारत के लिए ब्रेन गेन हो रहा है। देश ने कार्य सम्बन्धी अपने मानक स्तरों में इतने नाटकीय तरीके से वृद्धि की है कि तकनीकी क्षेत्र में अमेरिकी नेतृत्व के लिए चुनौतियां खडी हो गयी हैं। वस्तुतः इससे सम्बन्धित अध्ययनों का सार यही है कि उदारीकरण के बाद पूंजी के मुक्त-प्रवाह, श्रम कानूनों के लचीलेपन, आधार भूत संरचना की स्थिति का सुधार आदि के कारण चीन एवं भारत, दोनों मुक्त बाजार प्रणाली से अधिक से अधिक लाभ पाने की स्थिति में पहुंच रहे हैं। धीरे-धीरे अध्ययन व रोजगार में दोनों में वैसा ही माहौल बन रहा है जैसा कि अमेरिका व पश्चिमी देशों में था। अगर प्रतिभा वापस आ रही है तो इसका अर्थ

है कि स्थिति बन रही है- पहले से ज्यादा चुनौतीपूर्ण कैरियर के अवसर की उपलब्धता, आकर्षक वेतनमान, अमेरिका में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कमी एवं जीवन स्तर में प्रगति।

संयुक्त राष्ट्रः ब्रेन-ड्रेन

संयुक्त राष्ट्र के ताजा आंकड़ों के मुताबिक करीब 20 करोड़ लोग अपने देश को छोड़कर विदेशों में रह रहे हैं। वर्ष 1990 में प्रवासियों की संख्या में 25 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हो गयी है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने रिपोर्ट के हवाले से बताया है कि ज्यादातर लोग अमीर देशों की ओर रूख करते हैं। प्रत्येक पांच प्रवासियों में एक अमेरिका पहुंचता है। विदेशों में रहने वाले कई देशों के नागरिकों की बेहतर स्थिति का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इनके द्वारा भेजी जाने वाली रकम उनके पैतृक देश की सकल आय का एक बड़ा हिस्सा होती है। अन्नान का कहना है कि विदेशों में रोजी-रोटी के लिए जाना अब एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय चलन जैसा हो गया है। वर्ष 1990 में दुनियाभर के प्रवासियों की संख्या 15.5 करोड़ से बढ़कर 2005 में 19.1 करोड़ हो गयी है। ज्यादातर लोग अमीर देशों की ओर रूख करते हैं तथा करोडों लोगों ने बेहतर भविष्य व दूसरी वजह से एक विकासशील देश से दूसरे देश में अपना अशियाना बनाया । कहीं नीतियों की मदद से अंतर्राष्ट्रीय अप्रावसन सभी के लिए फायदेमन्द साबित हो सकती है। जिस देश से वह आये हैं व जिस देश में वह पहुंचे हैं, दोनों के लिये यह फायदे का सौदा हो सकता है। परन्तु इससे ब्रेन ड्रेन का भी खतरा रहता है क्योंकि अप्रवासन करने वाले ज्यादातर लोग उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं।

श्रम शक्ति के अभाव से जूझते विकसित देशः

इन दिनों विकसित देशों में प्रवासी कामगारों का मुद्दा काफी गरमाया हुआ है। अमेरिका एवं इंग्लैण्ड जैसे विकसित देशों में सस्ते श्रम की जरूरत है, जिसका स्रोत विकासशील देश ही हो सकते हैं। लेकिन धार्मिक व जातिवाद टकराव के कारण इन देशों के भीतर विदेशी कामगारों के आगमन पर रोक लगाने के लिए जबरदस्त आन्दोलन चल रहा है। अधिकांश विकासशील देशों में जनसंख्या के विकास या गिरावट की दर, श्रम शक्ति की जरूरत व औसत आयु बढ़ने से सेवानिवृत्त आबादी में बेतहाशा वृद्धि से एक नये तरह का संकट पैदा हो गया है।

अधिकांश विकसित देशों में जन्म दर गिर रही है और रिटायर आबादी का प्रतिशत बढ रहा है, जिससे अर्थ व्यवस्था पर बोझ बढ़ रहा है। पिछले 25 वर्षों में यूरोप जैसे विकासशील देश में श्रम शक्ति में 7 प्रतिशत गिरावट आयी है। 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की डेढ़ गुणी वृद्धि हो गयी। इन बुजुर्गो की सामाजिक सुरक्षा, वेलफेयर और पेंशन पर इन देशों की जी.पी.डी. का बड़ा हिस्सा खर्च करना होगा।

दुनियाभर के विकासशील देश जनसंख्या वृद्धि दर की चपेट में हैं। लेकिन भारत और चीन जैसे तेजी से विकसित हो रही आर्थिक शक्तियों की समस्या दूसरी तरह का सामना करना पड़ रहा है। इन देशों की आर्थिक वृद्धि दर रिकार्ड तेजी है पर दूसरी तरह सम्पत्ति और साधनों के समान मूलक वितरण और ये क्षेत्रीय विषमताओं को लेकर अनेक गम्भीर सवाल पैदा हो रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण बड़े पैमाने पर लोग काम से बाहर हो रहे हैं।